उदयन कथा

विराज

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

उदयन-कथा

लेखक

श्री विराज

प्रकाशक

सस्ता साहित्य मंडल • नई दिल्ली

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

मूल्य

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली

प्रकाशकीय

हमारे प्राचीन साहित्य में बहुत-सी ऐसी कथाएँ मिलती हैं, जो बड़ी ही सजीव और प्राणवान हैं और जिन्हें पढ़कर आज भी रोमांच हो आता है। 'कथा सरित्सागर' तो ऐसी कहानियों का भण्डार है। उसमें एक कथा राजा उदयन की आती है। यह कथानक इतना आकर्षक है कि संस्कृत के सुप्रसिद्ध लेखक श्री हर्ष ने 'रत्नावली' और 'प्रियदर्शिका' नाटकों की रचना उसीके आधार पर की है और महाकवि भास ने भी अपने सुविख्यात नाटक 'स्वप्नवासवदत्ता' को उसी पर आधारित किया है। उदयन की इस कथा ने और भी अनेक प्राचीन तथा अर्वाचीन लेखकों को उसपर लिखने की प्रेरणा दी है।

प्रस्तुत पुस्तक को भी, जैसा कि उसके नाम से स्पष्ट है, उसी कथा के आधार पर लिखा गया है। इस कथा में इतने उतार-चढ़ाव आते हैं कि पाठक इनमें लीन हो जाता है और पूरी पुस्तक समाप्त किये बिना उसे छोड़ नहीं सकता। इस पुस्तक की भाषा और शैली बड़ी सरल रक्खी गई है, जिससे सामान्य पाठक और विद्यार्थी भी उससे लाभ उठा सकें।

हमें आशा है कि पाठक इसे चाव से पढ़ेंगे।

उदयन-कथा

: १ :

बहुत पुराने समय में भारतवर्ष में कौरवों और पांडवों में एक भयंकर युद्ध हुआ था, जो महाभारत के नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध में कौरव हार गये थे और राज्य पांडवों को मिल गया था, परन्तु पांचों पांडवों में से एक का भी पुत्र बाकी न बचा। अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु बड़ी वीरता के साथ लड़ता हुआ चक्र-व्यूह में फँसकर मारा गया और पांडवों के शेष पांच पुत्रों को अश्वत्थामा ने सोते हुए मार डाला।

जब पांडव गलकर मरने के लिए हिमालय को चले तो उन्होंने अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को राज-सिंहासन पर बिठाया। परीक्षित बड़े धर्मात्मा और दयालु राजा थे। एक बार वह वन में शिकार खेलने गये। शिकार का पीछा करते-करते वह बहुत थक गये। प्यास के मारे उनका बुरा हाल होगया। तभी उन्होंने जंगल में एक ऋषि को समाधि में बैठे देखा। राजा परीक्षित ने उन ऋषि से पूछा, "क्यों महाराज, क्या आपने इस ओर किसी हिरन को भागकर जाते देखा है?"

ऋषि अपने ध्यान में मग्न रहे। उन्होंने कोई उत्तर न दिया। तब राजा ने पूछा, "क्यों महाराज, यहां कहीं आस-पास पीने को पानी मिलेगा ?"

ऋषि का ध्यान अब भी भंग न हुआ। वह उसी तरह समाधि में बैठे रहे। राजा को लगा कि ऋषि ढोंग कर रहा है। उन्होंने और तो कुछ नहीं किया, पर पास ही एक सांप मरा हुआ पड़ा था, उसे उठाकर उन्होंने ऋषि के गले में डाल दिया और आगे चल दिये।

कुछ देर बाद ऋषि का लड़का शृंगी वहां आया। वह बहुत क्रोधी स्वभाव का था। जब शृंगी ने अपने पिता के गले में मरा हुआ सांप देखा तो उसने क्रोध में आकर शाप दिया, "जिसने अपने बल के घमंड में आकर मेरे पिता के गले में यह मरा हुआ सांप डाला है, उसे आज से सात दिन के अन्दर तक्षक नाग डस लेगा।"

तक्षक बड़ा भयंकर नाग था। उसके डस लेने पर कोई जीता नहीं बच सकता था। जब ऋषि की समाधि टूटी तो उन्हें पता चला कि उनके पुत्र शृंगी ने परीक्षित को शाप दे दिया है। ऋषि ने शृंगी से कहा, "तूने शाप देकर अच्छा नहीं किया। महाराज परी-

क्षित धर्मात्मा राजा हैं। न जाने किस आवेश में वह ऐसा कर बैठे।"

पर शृंगी तो कभी हँसी-मजाक में भी झूठ नहीं बोलता था। उसका दिया हुआ शाप झूठा कैसे हो सकता था? अब उसे वापस लेने का कोई उपाय नहीं था। उसके पिता ने महाराज परीक्षित के पास सूचना भिजवा दी कि शृंगी ने उन्हें शाप दिया है कि सात दिन के अन्दर उन्हें तक्षक नाग डस लेगा। इसलिए बचने का जो भी उपाय हो सके, अवश्य करें।

इस सन्देश को सुनकर परीक्षित बहुत घबराये। वह समझ गये कि अब उनकी मृत्यु पास आ पहुँची है। वह जानते थे कि शृंगी ऋषि का शाप सच होकर ही रहेगा। फिर भी मनुष्य को जीवन बहुत प्यारा होता है। उन्होंने अपने बचाव के लिए एक नया महल बनवाया। वह महल इस ढंग से बनाया गया था कि उसमें लुके-छिपे सांप तो दूर, मक्खी-मच्छर तक भी नहीं घुस सकते थे। इसके अलावा दूर-दूर से सांप के काटे का मंत्रों और औषधियों से इलाज करनेवाले वैद्य बुलाकर पास रक्खे गये। इन सब उपायों को कर लेने के बाद भी राजा का अपना मन यही कहता था कि वह किसी भी तरह से बच नहीं सकेंगे। इसलिए वह उस महल में रहकर धर्म-कर्म की चर्चाओं में लगे रहने लगे और

भागवत की कथा सुनने लगे।

: २ :

उधर तक्षक राजा को डसने की ताक में रहने लगा। सातवें दिन वह अच्छी तरह तैयार होकर चला। रास्ते में उसे एक ब्राह्मण मिला, जो जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता परीक्षित की राजधानी हस्तिनापुर की ओर चला जा रहा था। तक्षक ने भी मनुष्य का वेश बना लिया और उस ब्राह्मण के पास जाकर पूछा, "तुम कौन हो, भाई? और इस तरह जल्दी-जल्दी कहां चले जा रहे हो?"

ब्राह्मण बोला, "मेरा नाम काश्यप है। मैंने सुना है कि तक्षक नाग महाराज परीक्षित को डसनेवाला है। मैं सांप के काटे से मरे हुए व्यक्ति को अपनी संजीवनी विद्या से जिला सकता हूं और इसीलिए हस्तिनापुर जा रहा हूं कि वहाँ राजा के मर जाने पर उसे जिला-कर उससे बहुत सारा धन प्राप्त करूं।"

मनुष्य-वेश धारी तक्षक बोला, "तुम बहुत भोले आदमी मालूम होते हो। तक्षक नाग का डसा हुआ कहीं जी सकता है? तुम व्यर्थ की मेहनत मत करो। वापस लौट जाओ। राजा को तुम जिला नहीं पाओगे और तुम्हारी व्यर्थ ही हँसी होगी।"

काश्यप ने कहा, "मैं योंही नहीं जा रहा हूं। अपनी विद्या पर मुझे पूरा भरोसा है। तक्षक तो क्या,

स्वयं वासुकि ही क्यों न हों, मैं जहरीले-से-जहरीले सांप के विष को भी उतारने में समर्थ हूं। और फिर इस तरह धन प्राप्त करने का अवसर रोज-रोज थोड़े ही आता है!"

तक्षक ने कहा, "अगर तुम्हें अपनी विद्या पर इतना अधिक भरोसा है, तो सुनो। मैं ही तक्षक हूँ। तुम अभी यहीं अपनी विद्या की परीक्षा कर लो।"

काश्यप ने आश्चर्य से पूछा, "तुम स्वयं तक्षक हो?"

तक्षक ने कहा, "हाँ, मैं ही तक्षक हूँ। मैं इस सामने खड़े वृक्ष को डसता हूं। तुम उसपर अपनी विद्या का चमत्कार दिखाओ, तब मैं समझूंगा कि तुम समर्थ हो।"

इतना कहकर तक्षक ने अपना नाग-रूप धारण कर लिया और बड़े गुस्से से फुफकारकर उस पेड़ को डस लिया। उसके डसते ही उस वृक्ष पर विष का असर होने लगा। देखते-देखते उसके पत्ते मुरझाने लगे और थोड़ी ही देर बाद सूखकर जलने लगे। टहनियों और शाखाओं में से आग की लपटें निकलने लगीं और देखते-देखते वह बड़ा भारी पेड़ जलकर राख हो गया।

तब तक्षक ने बड़े गर्व के साथ कहा, "ब्राह्मण-देवता, तुमने देख लिया मेरे विष का असर! अब तुम

दिखाओ अपनी विद्या। देखता हूं, तुम किस तरह इस वृक्ष को फिर जिन्दा करते हो !"

काश्यप ने पलभर तक्षक की ओर देखा फिर धीरे-धीरे उस पेड़ के पास पहुँचा। वहां राख के ढेर के सिवाय कुछ नहीं था। काश्यप ने थोड़ी देर तक वहां बैठकर कुछ मन्त्र पढ़े और कई जड़ी-बूटियाँ घिस-घिसकर उस राख को छुआईं। उसके बाद फिर मन्त्र पढ़े और अन्त में अपने कमण्डलु के पानी से उस राख के ढेर पर कुछ छींटे दिये।

तक्षक के अचरज का ठिकाना न रहा, उस राख के ढेर में से एक छोटा-सा अंकुर निकलता दिखाई पड़ा और देखते-देखते बढ़कर वह पूरा पेड़ बन गया। उसमें उसी तरह की बड़ी-बड़ी शाखाएँ और हरे-हरे पत्ते निकल आये। काश्यप ने गर्व से अपना माथा ऊँचा किया और तक्षक से बोला, "देखा मेरी विद्या का चमत्कार !"

तक्षक सोच में पड़ गया। अगर वह परीक्षित को काटता है और उसके मर जाने पर यह ब्राह्मण उसे जाकर जिला देता है तो उसकी बड़ी बदनामी होगी। तक्षक के काटने के बाद भी राजा जी जाय तो संसार में उसका मान घट जायगा। यह सोच तक्षक ने ब्राह्मण से कहा, "काश्यप, तुम धन के लिए ही तो राजा के

पास जाते हो। जितना धन तुम्हें चाहिए, मुझसे ले लो और वापस अपने घर लौट जाओ।"

काश्यप ने सोचा कि ठीक ही तो है। शृंगी ऋषि के शाप के कारण राजा की मृत्यु तो अवश्य होनी ही है। मैं अगर सांप के विष को उतार भी दूंगा तो भी राजा के प्राण तो बचेंगे नहीं। पता नहीं उस दशा में धन मिले या न मिले। उलटे और कोई विपत्ति ही सिर न आ जाय। इसलिए अच्छा यही है कि इसीसे धन लेकर वापस लौट चलूं।

और काश्यप तक्षक से मुँहमांगा धन लेकर वापस चला गया। उसके बाद तक्षक ने अपने कुछ सेवकों को मुनियों का वेश बनाने को कहा। उसने कहा कि वे राजा को कुछ फल ले जाकर भेंट करें। इनमें से एक फल के अन्दर तक्षक स्वयं एक छोटे-से भुनगे का रूप धारण करके बैठ गया।

तक्षक के सेवकों ने मुनि के वेश में जाकर वे फल राजा को दे दिये और वापस लौट आये।

: ३ :

सातवाँ दिन समाप्त होनेवाला ही था। राजा की घबराहट अब कम हो चली थी। सूरज छिपने में कुछ ही देर थी। परीक्षित ने सोचा कि जब तक्षक अबतक नहीं डस पाया तो अब क्या डस

पायगा। राजमहल के चारों ओर कड़ा पहरा था। कोई भी जीव लुके-छिपे भी अन्दर नहीं जा सकता था। अतः राजा ने कहा, "तक्षक के डर के मारे मेरा तो खाना-पीना भी छूट गया। बड़ी भूख लग रही है। अब तो तक्षक के आने का डर नहीं रहा। चलो, अब कुछ खाया-पिया जाय।" यह कहकर उसने मुनियों द्वारा लाये हुए फल अपने दरबारियों को देते हुए कहा, "लो, तुम लोग भी खाओ।"

और राजा ने वह फल स्वयं खाने के लिए उठाया, जिसमें भुनगे के रूप में तक्षक बैठा हुआ था। फल काटने पर उसमें से वह भुनगा निकला। उसे देखकर राजा हँसने लगा। बोला, "तक्षक तो नहीं आ पाया, पर हाँ, यह जरा-सा भुनगा हमारे महल में न जाने कहां से आ पहुँचा है। इस समय अगर यही तक्षक का प्रतिनिधि बनकर मुझे काट ले तो ऋषि का शाप भी पूरा हो जाय और मेरी जान भी बच···।"

राजा की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि तक्षक ने अपना असली रूप धारण कर लिया। उसने इतनी जोर से फुंकार मारी कि आँधी-सी चलने लगी। उसकी फुंकार में से आग की लपटें निकलने लगीं। सारे दरबारी डरकर भाग खड़े हुए। भय के मारे राजा से हिला भी न गया। तक्षक ने क्रोध

में भरकर परीक्षित को तीन बार काटा। देखते-देखते राजा का शरीर अकड़ गया। उसके मुँह से झाग निकलने लगे और वह मर गया। चारों ओर भारी कुहराम मच गया। तक्षक तुरन्त महल में से निकलकर भाग गया।

परीक्षित की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जनमेजय राजगद्दी पर बैठा। उसके पिता को तक्षक नाग ने डसा था, इसलिए जनमेजय को नागों पर बहुत क्रोध था। उसने बड़े-बड़े विद्वान् पुरोहितों को बुलाकर एक बड़ा भारी नाग-यज्ञ किया। जब पुरोहितों ने यज्ञकुण्ड में मन्त्र पढ़-पढ़कर आहुतियाँ देनी शुरू कीं तो नाग स्वयं आ-आकर यज्ञकुण्ड में गिरने लगे। हर रोज हजारों नाग कुण्ड में आकर गिरते और मर जाते। अपने पिता की मृत्यु का बदला लेकर जनमेजय को बड़ा सन्तोष होता था, पर अभी तक तक्षक आकर कुण्ड में नहीं गिरा था। जनमेजय ने पुरोहितों से कहा, "वह मन्त्र पढ़कर आहुति दो, जिससे तक्षक आकर इस कुण्ड में गिरे।"

लेकिन तक्षक भागकर इन्द्र की शरण में चला गया था। जब पुरोहितों ने तक्षक को यज्ञकुण्ड में गिराने के लिए मन्त्र पढ़ा तो वह इन्द्र की शरण में होने के कारण कुण्ड में गिरा नहीं।

पुरोहितों ने कहा, "महाराज, तक्षक इन्द्र की शरण में चला गया है। इसलिए कुण्ड में नहीं गिरता।"

जनमेजय ने इन्द्र से कहा, "इन्द्र, तक्षक से हमारा वैर है। तुम उसे शरण मत दो।"

इन्द्र ने कहा, "मैं शरणागत को छोड़ नहीं सकता। तुमसे जो हो सके, करलो।"

इससे जनमेजय को क्रोध आ गया। उसने पुरोहितों से कहा, "ऐसे मन्त्र पढ़कर आहुति दो, जिससे इन्द्र और तक्षक दोनों ही यज्ञकुण्ड में आ गिरें।"

पुरोहितों ने ऐसे मंत्र पढ़ने शुरू किये ही थे कि तभी आस्तीक नाम के एक ऋषि वहां आ पहुंचे। उन्होंने राजा से कहा, "महाराज, मुझे एक भिक्षा दीजिये।"

राजा ने बिना सोचे कहा, "मांगिये।"

आस्तीक ने कहा, "यह नाग-यज्ञ इसी समय बन्द करवा दीजिये।"

उसी समय पुरोहितों ने मंत्र पढ़ा और 'इंद्र के साथ तक्षक स्वाहा हों' यह कहकर आहुति दी। आहुति देनी थी कि इन्द्र और तक्षक आकाश से गिरकर यज्ञकुण्ड की ओर आने लगे।

जनमेजय बिना सोचे आस्तीक से मांगने को कह चुके थे, इसलिए वह अब उसे इन्कार नहीं कर सकते थे। उन्होंने कहा, "अच्छा, यज्ञ बन्द किया।"

उनके इतना कहते ही इन्द्र और तक्षक का गिरना रुक गया। नागों का जितना नाश हो चुका था, वह भी बहुत अधिक था। जनमेजय ने उनका और नाश करना बन्द कर दिया।

:४:

इस जनमेजय का पुत्र शतानीक था। उसने वत्स नामक एक नया राज्य बसाया। इस राज्य की राजधानी कौशाम्बी थी। यह नगरी इतनी सुन्दर थी कि स्वर्ग की राजधानी अमरावती भी उसकी तुलना में फीकी जान पड़ती थी।

शतानीक की रानी का नाम विष्णुमती था। इन दोनों के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम सहस्रानीक रखा गया। जब वह पुत्र जवान हो गया तो शतानीक ने राजकाज उसे सौंप दिया और स्वयं आनन्द से जीवन बिताने लगा।

एक बार देवताओं और राक्षसों में लड़ाई छिड़ गई। देवताओं के राजा इन्द्र ने राजा शतानीक से सहायता मांगी। शतानीक अपने मन्त्री योगन्धर और सेनापति सुप्रतीक के भरोसे अपने पुत्र सहस्रानीक को राजगद्दी पर बिठाकर, राक्षसों से लड़ने के लिए चल पड़ा। युद्ध-क्षेत्र में पहुंचकर राजा शतानीक ने बड़ी वीरता दिखाई। उसने अनेक बलवान राक्षसों को मारा। परन्तु

अन्त में लड़ते-लड़ते वह स्वयं भी मारा गया। इस युद्ध में विजय देवताओं की ही हुई।

विजय की खुशी में इन्द्र ने एक उत्सव किया। उसमें उसने अपना रथ भेजकर सहस्रानीक को भी बुलाया। इस समय तक सहस्रानीक का विवाह नहीं हुआ था। उस उत्सव में और सब देवता अपनी-अपनी पत्नियों के साथ हँस-खेल रहे थे। उन्हें देखकर सहस्रानीक कुछ उदास-सा हो गया। इन्द्र ने उसके मन की बात जान ली। उसने कहा, "सहस्रानीक, पृथ्वी पर तुम्हारी पत्नी बनने योग्य एक ही कन्या है। वह है अयोध्या के राजा कृतवर्मा की लड़की मृगावती। उससे शीघ्र ही तुम्हारा विवाह होगा।"

उत्सव समाप्त होने पर सहस्रानीक मातलि के रथ में बैठकर अपने नगर की ओर लौटने लगा। उस समय उसका मन मृगावती की ओर लगा हुआ था। उसे और किसी बात की सुध-बुध नहीं थी। उसी समय तिलोत्तमा नाम की अप्सरा ने पुकारकर कहा, "राजकुमार, जरा रुकना। तुमसे कुछ बात करनी है।"

पर राजकुमार सहस्रानीक का ध्यान उस ओर नहीं था, इसलिए उसे तिलोत्तमा की पुकार सुनाई नहीं पड़ी। उसने रथ नहीं रुकवाया। इससे तिलोत्तमा को बहुत गुस्सा आया। उसने सहस्रानीक को शाप दिया,

"जिसके ध्यान में मग्न होकर तूने मेरी आवाज तक नहीं सुनी, उसके वियोग में तुझे १४ साल तक दुःख भोगना होगा।"

पर राजकुमार तो मृगावती के ध्यान में मग्न था, इसलिए उसे तिलोत्तमा का यह शाप भी सुनाई नहीं पड़ा। इस शाप को केवल मातलि ने सुना, जो रथ हाँक रहा था।

अपनी राजधानी कौशाम्बी में आकर सहस्रानीक ने योगन्धर इत्यादि अपने मंत्रियों को इन्द्र के साथ हुई बातचीत सुनाई और उनकी सलाह से अयोध्या के राजा के पास एक दूत के हाथ सन्देश भेजा कि वह अपनी लड़की मृगावती का विवाह उससे कर दे।

इस सन्देश को पाकर कृतवर्मा बहुत प्रसन्न हुआ। वह जानता था कि सहस्रानीक बहुत वीर और गुणी राजा है। वह स्वयं ऐसे ही किसी राजा से अपनी कन्या का विवाह करना चाहता था। बड़ी धूमधाम के साथ राजा सहस्रानीक और मृगावती का विवाह हो गया। उस समय मृगावती जैसी सुन्दर और कोई लड़की सारे देश में नहीं थी। वह देखने में चन्द्रमा की चांदनी के समान प्यारी लगती थी। उसे पाकर राजा सहस्रानीक को बड़ा आनन्द हुआ।

उन्हीं दिनों उनके मन्त्री योगन्धर के पुत्र का जन्म

हुआ। इस पुत्र का नाम यौगन्धरायण रखा गया। सेनापति सुप्रतीक के पुत्र का नाम रुमण्वान् रखा गया। सहस्रानीक का एक और मित्र था। उसके यहां भी पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम वसन्तक रखा गया।

कुछ समय बाद रानी मृगावती मां बनने को हुई। एक दिन रानी तालाब में नहा रही थी कि दूर आकाश में गरुड़ जाति का एक बहुत बड़ा पक्षी उड़ रहा था। नहाती हुई रानी को देखकर उस पक्षी ने समझा कि मांस का पिंड तालाब में तैर रहा है। उसने जोर का
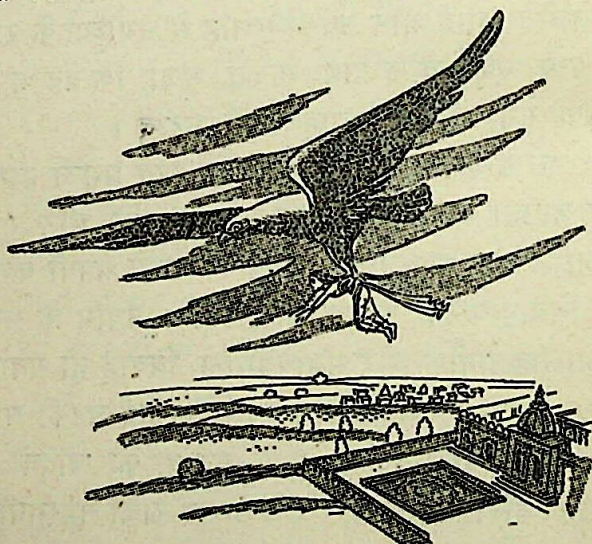
पक्षी रानी को अपने पंजों में दबोचकर उड़ चला।

झपट्टा मारा और रानी को अपने पंजों में दबोचकर

उड़ गया। जब राजा ने देखा उसकी प्यारी रानी को कोई पक्षी लेकर आकाश में उड़ गया तो वह दुःख के मारे बेहोश हो गया। कुछ देर बाद जब राजा को होश आया तो उसने सोचा कि अब जीने से क्या लाभ? रानी की याद करके उसकी इच्छा होने लगी कि किसी तरह वह स्वयं भी मर जाय तो अच्छा हो। जब इन्द्र के सारथि मातलि ने राजा का यह हाल देखा तो वह तुरन्त राजा के पास आया। उसने आकर राजा को तिलोत्तमा के शाप की बात बतलाई और कहा कि इस शाप के कारण तुम्हें अपनी रानी मृगावती से चौदह वर्ष तक अलग रहना पड़ेगा, परन्तु उसके बाद तुम्हारी रानी फिर तुम्हें मिलेगी। मातलि की बात सुनकर राजा को कुछ धीरज बंधा। उसने मरने का विचार त्याग दिया। वह बहुत उदास होकर रानी की याद कर-करके अपने दिन बिताने लगा।

: ५ :

जो विशाल पक्षी रानी मृगावती को मांस का पिंड समझकर ले उड़ा था, वह केवल मरे हुए पशुओं का ही मांस खानेवाला था। उसने जब देखा कि यह तो मांस का लोथड़ा नहीं, बल्कि कोई जिन्दा स्त्री है तो उसने उसे छोड़ देने का विचार कर लिया। पर इतनी देर में वह बहुत तेजी से उड़ता हुआ उदयाचल पर्वत

पर पहुंच गया था। उसने वहीं पर्वत पर रानी मृगावती को छोड़ दिया और स्वयं सर्राटा भरता हुआ आकाश में उड़ गया।

रानी की हालत बहुत ही बुरी हो गई। जो एक धोती पहने वह नहा रही थी, उसके सिवाय और कोई कपड़ा उसके पास न था। आस-पास चारों ओर घना जंगल था। कोई आदमी दिखाई नहीं पड़ता था। करे तो क्या करे। दुःख और घबराहट के मारे रानी रोने लगी।

रानी के रोने की आवाज एक अजगर ने सुनी। यह अजगर भूख से बेचैन था। वह धीरे-धीरे रेंगता हुआ रानी के पास आ पहुँचा और उसे निगलने का डौल करने लगा। जब रानी ने अजगर को देखा तो उसके होश उड़ गये। डर के मारे उसका शरीर अकड़-सा गया और गला रुंध गया। वह आँखें मींचकर मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगी।

उसी समय आकाश से एक यक्ष उतरा। उसने अज-गर को मार डाला। इस प्रकार रानी के प्राण बचाकर वह यक्ष जैसे आया था, उसी प्रकार फिर वापस चला गया। जब रानी ने आँखें खोलीं तो देखा कि अजगर मरा पड़ा है। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, पर उसका डर कम न हुआ। वह समझ नहीं पा रही थी

कि क्या करे। जब उसे अपने पति राजा सहस्रानीक की याद आई तो उसका दिल फटने-सा लगा। उसने सोचा कि इस तरह जीने से तो मर जाना अच्छा है।

तभी सामने से एक जंगली हाथी आता दिखाई पड़ा। रानी ने सोचा कि यदि मैं इसके पास जाऊँगी तो यह मुझे मार डालेगा। मरने की इच्छा से वह अपने दिल को कड़ा करके उस हाथी के पास पहुँच गई। उसका दिल धड़क रहा था और पैर कांप रहे थे। मरने का निश्चय कर लेने पर भी मरना बहुत आसान नहीं होता। पर जैसे-तैसे वह हाथी के पास पहुँच ही गई।

लेकिन उस हाथी ने रानी की दशा देखी तो उसे रानी पर दया आ गई। उसने रानी को मारा नहीं। चाहने पर मौत भी नहीं मिलती। रानी को जो भी जंगली पशु दिखाई पड़ा, वह उसीके पास गई कि कोई तो उसे मार डाले, पर अचरज की बात यह कि उसे किसी भी जानवर ने न मारा। आखिर हर तरह से निराश होकर वह थककर बैठ गई और फूट-फूटकर रोने लगी।

विपत्ति का अन्त भी कभी-न-कभी आता ही है। रानी मृगावती जब बैठी रो रही थी, उसी समय एक ऋषिकुमार फल-फूल इकट्ठा करने के लिए वहीं जंगल में आया हुआ था। उसने रानी की आवाज सुनी और

उसके पास ग्रा पहुंचा । रानी से उसने उसका सारा हाल-चाल पूछा । उस ऋषिकुमार को देखकर ग्रौर उसकी बातचीत के ढंग से रानी को धीरज बंधा । उसने ग्रपने सारी ग्रापबीती सुनाई ।

यह ऋषिकुमार महर्षि जमदग्नि का शिष्य था । वह रानी को ग्रपने साथ महर्षि जमदग्नि के ग्राश्रम में ले ग्राया । महर्षि जमदग्नि ने ग्रपने योगबल ग्रौर दिव्य दृष्टि से रानी का पिछला सारा हाल जान लिया । तिलोत्तमा के शाप की बात भी उन्हें मालूम हो गई । उन्होंने रानी को दिलासा देते हुए कहा, "बेटी, घबराग्रो नहीं । तुम्हारे तेजस्वी पुत्र का जन्म इसी ग्राश्रम में होना लिखा है । समय ग्राने पर फिर तुम ग्रपने पति से मिलोगी । तबतक तुम यहीं ग्राश्रम में रहो ।"

रानी मृगावती को ऋषि की बातें सुनकर बड़ा सन्तोष हुग्रा । वह ग्रपने पति से मिलने की ग्राशा में वहीं रहकर दिन बिताने लगी । वहीं उसने एक पुत्र को जन्म दिया । जब वह बालक पैदा हुग्रा, तभी ग्राकाशवाणी हुई कि यह बालक बड़ा विद्वान, कलाकार ग्रौर चक्रवर्ती राजा बनेगा । इस बालक का नाम उदयन रखा गया ।

: ६ :

उदयन धीरे-धीरे बड़ा होने लगा । महर्षि जमदग्नि

ने उसे सारी विद्याएं सिखाईं। उसे तरह-तरह के अस्त्र-शस्त्र चलाने सिखाये। धीरे-धीरे उदयन शिकार के लिए वन में भी जाने लगा। तब उसकी माता मृगावती ने अपनी बांह में बंधा हुआ अनन्त खोलकर उदयन की बांह में बांध दिया। यह अनन्त राजा सहस्रानीक ने रानी मृगावती को दिया था और इस पर राजा का नाम खुदा हुआ था।

एक दिन की बात कि उदयन घने जंगल में फिर रहा था। वहां उसने देखा कि एक भील ने एक सांप को पकड़ रक्खा है और उसे अपने पिटारे में बन्द करने की कोशिश कर रहा है। सांप उस भील के हाथ से
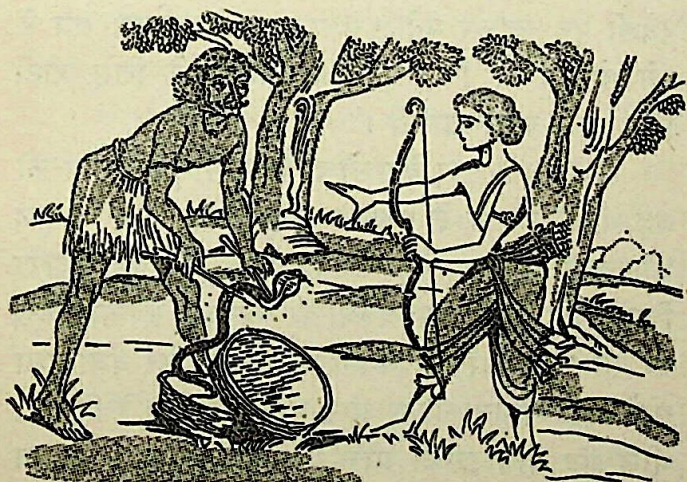
"इस सांप को छोड़ दो।" उदयन ने कहा।

छूटने के लिए जी-जान से कोशिश कर रहा था, पर किसी तरह छूट नहीं पा रहा था। उस सांप को देखकर उदयन को दया आ गई। उसने उस भील से कहा, "इस सांप को छोड़ दो ?"

उदयन के तेजस्वी मुख और रोब से भरी हुई आवाज को सुनकर भील विनयपूर्वक बोला, "महाराज, मैं गरीब आदमी हूँ। सांप का खेल दिखाकर जैसे-तैसे अपने बाल-बच्चों का पेट पालता हूँ। मेरे पास पहले एक सांप था, वह कई दिन हुए मर गया। सारे जंगल में कई दिन तक भटकने के बाद बड़ी मुश्किल से आज यह सांप हाथ आया है। अपनी जान हथेली पर रखकर मैंने इसे पकड़ा है। अगर अब मैं इसे छोड़ दूं तो फिर अपने बाल-बच्चों के लिए रोटी किस तरह कमा पाऊंगा।"

उदयन ने ज़रा देर सोचा। उस सुंदर सांप को वह भील के हाथ से छुड़ाना चाहता था। पर जो कुछ भील कह रहा था, वह भी तो सच था। वह बेचारा किस तरह अपने बाल-बच्चों का पेट भर सकेगा? कुछ देर सोचने के बाद उदयन ने अपनी बांह पर बंधा हुआ सोने का अनन्त खोला और उस भील को दे दिया। भील मुँह बाये उसकी ओर देखता रह गया। उदयन ने कहा, "इसे बेचकर तुम अपने परिवार का पालन

करना। अब इस सांप को छोड़ दो।"

भील ने वह अनन्त ले लिया और उदयन को प्रणाम करके वहां से चला गया।

भील के चले जाने पर उस सांप ने उदयन से कहा, "तुमने आज मेरे प्राण बचाकर मुझपर बड़ा उपकार किया है। मैं कोई साधारण सांप नहीं हूँ। मैं नागराज वासुकी का बड़ा भाई हूँ। मैं तुम्हें यह 'घोषवती' नाम की वीणा देता हूँ। इसकी आवाज को जो भी कोई सुनेगा, वही मस्त होकर तुम्हारे वश में हो जायगा। इसके साथ ही मैं तुम्हें कभी न मुरझानेवाली माला (अम्लान-माला) और कभी न मिटनेवाले तिलक (अम्लान-तिलक) बनाने का तरीका भी बताये देता हूं।"

इतना कहकर उस सांप ने उदयन को अपनी 'घोष-वती' नाम की वीणा दी और 'अम्लान-माला' और 'अम्लान-तिलक' तैयार करने का ढंग भी सिखा दिया। उदयन प्रसन्न होकर वीणा को लेकर आश्रम को लौट आया। उपकार का फल सदा अच्छा ही होता है।

वह भील उदयन से सोने का अनन्त लेकर उसे बेचने के लिए शहर गया। वहां जब उसने सुनार को वह अनन्त दिखाया तो सुनार ने उसपर राजा का नाम खुदा देखकर उस भील को पुलिस के हवाले कर

दिया। सिपाही भील को पकड़कर राजा सहस्रानीक के पास ले गए।

उस अनन्त को देखकर राजा को बड़ी चिन्ता हुई। यह अनन्त तो रानी मृगावती के पास था। इस भील को यह कहां से मिला? कहीं इसने इस अनन्त के लिए रानी को मार तो नहीं डाला? या फिर किसी और पशु ने रानी को मार डाला हो और वन में पड़ा हुआ यह अनन्त इस भील को मिला हो? लेकिन अगर रानी जिन्दा होती तो यह अनन्त इस भील के हाथ कैसे पड़ता? इसी तरह की बातें सोचते हुए राजा ने उस भील से पूछा, "क्यों रे, तुझे यह अनन्त कहां से मिला?"

भील ने सारा हाल ज्यों-का-त्यों सच-सच कह सुनाया।

राजा को भील की बात पर विश्वास हो गया। उसने उस भील को उस अनन्त के बदले उससे भी अधिक मूल्य का सोना दिलवा दिया और भील से कहा, "तुम्हें जहां से यह अनन्त मिला था, उसी जगह हमारे साथ चलना होगा।"

भील राजी होगया। राजा ने अपनी सेना सजाई और धूमधाम से उदयाचल की ओर चल पड़ा। अपनी रानी और अपने पुत्र की खबर सुनकर उसका मन

फूला नहीं समा रहा था।

कई दिन की लम्बी यात्रा के बाद राजा सहस्रानीक उदयाचल पर महर्षि जमदग्नि के आश्रम में पहुंचा। जमदग्नि राजा को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। राजा ने उन्हें विनयसहित प्रणाम किया। जमदग्नि ने रानी मृगावती और कुमार उदयन को बुलाकर राजा को सौंप दिये। राजा की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। रानी को भी अपार खुशी हुई। राजा कुछ दिन तक महर्षि जमदग्नि के आश्रम में अतिथि बनकर रहे, उसके बाद अपनी पत्नी और पुत्र को लेकर कौशाम्बी लौट आये।

: ७ :

कौशाम्बी आकर सहस्रानीक ने उदयन को युवराज बना दिया और यौगन्धरायण, रुमण्वान् तथा वसन्तक को उसका मंत्री। इस प्रकार राज-काज उदयन को सौंपकर राजा सहस्रानीक सुख से अपने दिन बिताने लगे। बहुत वर्षों के बाद जब वे बूढ़े हुए तो अपनी रानी को साथ लेकर हिमालय की ओर चले गये।

राजा उदयन बड़ी लगन के साथ प्रजा का पालन करने लगा। शीघ्र की उसका यश सब ओर फैल गया। उसके राज्य में सुखी होकर सब लोग उसके गुण गाने

लगे। यौगन्धरायण, रुमण्वान् और वसन्तक भी बड़ी योग्यता से राज का सारा कार्य सम्भालते थे। राजा भला हो, तो उसके अनुचर भी भले ही रहते हैं।

उदयन को शिकार का शौक था। वह कभी-कभी जंगल में जाता और वहां बैठकर अपनी 'घोषवती' वीणा बजाने लगता। उस वीणा की आवाज सुनकर जंगल के सभी जानवर आस-पास आ जाते और बड़े ध्यान से उस संगीत को सुनने लगते। इन जानवरों में हिरन, हाथी, रीछ और भालू सभी होते थे। उदयन उनमें से अच्छे-अच्छे हाथियों को छांटकर अपने साथ नगर में ले आता। इस प्रकार उसके यहां अच्छे हाथियों की काफी बड़ी सेना इकट्ठी हो गई।

उदयन की आयु विवाह के योग्य हो गई तो उसके मंत्रियों ने सोचा कि अब उसका विवाह हो जाना चाहिए। उन दिनों अवन्ति (उज्जैन) में चंड महासेन राजा था। उसकी कन्या वासदवत्ता रूप और गुण में बेजोड़ थी। उदयन चाहता था कि उसका विवाह वासवदत्ता से हो। पर यह विवाह किस तरह हो, यह समस्या थी। चंड महासेन से किस प्रकार विवाह की बात चलाई जाय ?

उधर चंड महासेन को भी अपनी पुत्री के विवाह की चिन्ता थी। वह अपनी लड़की का विवाह अच्छे-

से-अच्छे राजकुमार से करना चाहता था। बहुत सोच-विचार के बाद वह इसी परिणाम पर पहुंचा कि उदयन से अच्छा और कोई राजकुमार नहीं है, और उसने वासवदत्ता का विवाह उदयन से करने का विचार किया। पर वह सोच में पड़ा कि विवाह कैसे किया जाय ? अपनी ओर से विवाह का प्रस्ताव भेजने में चंड महासेन को हिचक हुई। तब उसने एक और उपाय सोचा।

उसने उदयन के पास एक दूत भेजा। दूत ने आकर उदयन को चंड महासेन का सन्देश सुनाया—"महाराज, अवन्तिनरेश ने कहलाया है कि उनकी कन्या वासवदत्ता आपसे संगीत और वीणा बजाना सीखना चाहती है। अगर आपका अवन्तिराज से प्रेम है तो उनकी कन्या को संगीत सिखाने के लिए अवन्ति पधारें।"

चंड महासेन का यह सन्देश उदयन को अपमानजनक लगा। वह क्या चंड महासेन का नौकर है, जो संगीत सिखाने के लिए अवन्ति जाय ? वासवदत्ता से वह विवाह करना अवश्य चाहता था, किन्तु इस तरह अपमानित होकर कभी नहीं। उसने अपने मंत्रियों से सलाह की और दूत के हाथ सन्देश भिजवा दिया—"अगर तुम्हारी कन्या संगीत सीखना चाहती है तो उसे यहां कौशाम्बी भेज दो।"

मंत्री यौगन्धरायण ने राजा को सलाह दी कि चंड महासेन आपको व्यसनी समझकर इस तरह काबू करना चाहता है, इसलिए आप शिकार आदि व्यसनों को छोड़ दीजिये।

जब चंड महासेन को दूत ने जाकर उदयन का उत्तर सुनाया तो वह चिन्ता में पड़ गया। उसने सोचा कि उदयन तो स्वाभिमानी होने के कारण यहां आता नहीं और वासवदत्ता को वहां भेजने में मेरा अपमान है। तब फिर इन दोनों में परस्पर प्रेम किस तरह करवाया जाय? अन्त में उसने निश्चय किया कि किसी तरह चालाकी से उदयन को पकड़कर अवन्ति ले आया जाय।

सोच-विचारकर उसने एक नकली हाथी बनवाया, जो देखने में बिलकुल असली हाथी जैसा ही जान पड़ता था। वह उसी तरह चलता, फिरता और चिंघाड़ता था। उसी तरह पेड़ों से तोड़-मरोड़कर पत्ते और डालियां खाता था। पर यह मायागज अन्दर से खोखला था और इसके अन्दर बहुत-से सिपाही छिपे हुए थे।

इतना बड़ा हाथी पहले कभी वत्स राज्य की सीमाओं के आस-पास दिखाई नहीं पड़ा था। जब जंगलों में फिरनेवाले शिकारियों ने उसे देखा तो उन्हों-ने राजा उदयन को खबर दी कि एक बहुत बड़ा हाथी जंगल में आया हुआ है। ऐसा हाथी जरूर पकड़ा

जाना चाहिए ।

यह खबर सुनकर उदयन को बड़ी प्रसन्नता हुई। वह तो अच्छे-से-अच्छे हाथी पकड़ने का मौका ढूंढ़ा ही करता था। अतः अपनी घोषवती वीणा को लेकर हाथी पकड़ने निकल पड़ा। लोगों का शोर सुनकर हाथी के भाग जाने का डर था। इसलिए उसने कोई भी आदमी साथ न लिया।

उदयन जंगल में पहुंचा। दो-एक दिन तो हाथी को ढूंढ़ने में ही लग गये। यह नकली हाथी भी असली हाथियों की तरह दूर-दूर तक घूमता-फिरता रहता था। पर जब पहले-पहल उदयन ने उसे देखा तो उसकी बाछें खिल गईं। हाथी क्या, पूरा पहाड़-का-पहाड़ था। जब इसपर बैठकर वह कौशाम्बी की सड़कों पर निकलेगा तो लोग देखकर कितने खुश होंगे! उसने हाथी के कुछ पास पहुंचकर अपनी घोषवती वीणा बजानी शुरू की। उस वीणा का संगीत इतना मधुर था कि आकाश में उड़ते हुए पंछी तक उसे सुनने के लिए पेड़ों पर बैठ गये। वन में फिरनेवाले हिरन उस वीणा की आवाज सुनकर दौड़ते हुए पास आ पहुँचे और शान्त खड़े होकर सुनने लगे। वह हाथी भी उस संगीत को सुनकर कभी उदयन की ओर देखता, कभी कुछ पास आता, फिर वापस लौट जाता। बड़ी

देर तक वह इसी तरह टहलता रहा। अन्त में उदयन वीणा बजाता हुआ धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ा। जो पशु-पक्षी बैठे संगीत सुन रहे थे, वे भी उसके साथ चले। पेड़ बेचारे चल नहीं सके, पर उनसे जितना झुका गया, उतना ही वे उदयन की ओर झुक गये।

उदयन को अपनी ओर आते देखकर हाथी रुक कर खड़ा हो गया। वह सूँड हिला-हिलाकर उदयन की ओर देखने लगा। उदयन ने अबतक ऐसा कोई हाथी न देखा था, जो उसकी वीणा को सुनकर उसके काबू में न आ जाय। इसलिए इस हाथी को देखकर उसे बड़ा अचरज हुआ। पर वह वीणा बजाता हुआ उसके पास तक पहुँच गया। वह उसकी सूंड पर हाथ फेरने लगा था। इतने में उस हाथी के पेट के पास से एक खिड़की खुली और उसमें से कई सिपाही कूद पड़े। उन्होंने उदयन को पकड़कर एक रथ में डाला और तेजी से अवन्ति की ओर भाग चले।

पहले तो उदयन हक्का-बक्का रह गया। यह क्या हो गया? हाथी में से सिपाही कहां से निकल आये? उसे लड़ने तक का मौका न मिला। वह यह भी न समझ पाया कि उसे पकड़नेवाले ये लोग कौन हैं? फिर इन्होंने उसे मारा क्यों नहीं? सिर्फ पकड़ा ही क्यों? और अब पकड़कर उसे कहां लिये जा रहे हैं?
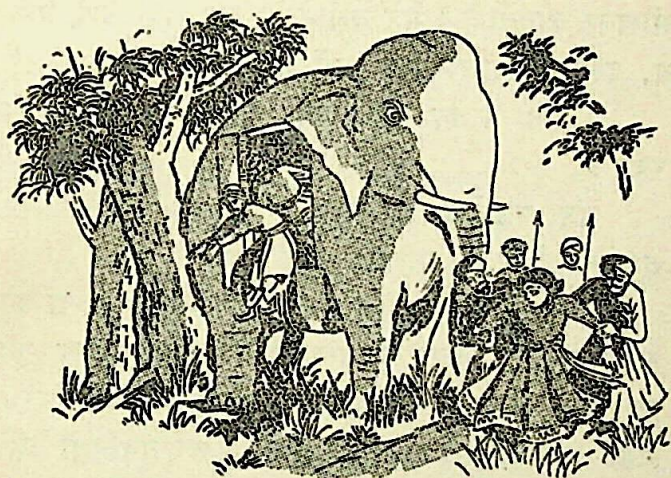
हाथी के पेट से निकले सैनिकों ने उदयन को पकड़ लिया।

वे सिपाही उदयन को पकड़कर अवन्ति ले आये। चंड महासेन उदयन को किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना चाहता था। उसने उसे एक शानदार महल में कैद कर दिया। यहां उसके सुख की सब चीजें थीं, परन्तु महल के चारों ओर पहरेदार खड़े हुए थे। उनकी आँख बचाकर कोई पंछी तक महल में आ-जा नहीं सकता था। उदयन के पैरों में सोने की बेड़ियाँ डाल दी गई थीं, ताकि वह भाग न सके।

एक दिन चंड महासेन उदयन के पास आया। उसने कहा, "उदयन, तुम्हें कष्ट देने की मेरी तनिक भी इच्छा नहीं है। मेरी कन्या वासवदत्ता तुमसे संगीत-विद्या

सीखना चाहती है। मेरे बुलाने पर तुम यहां नहीं आये थे, इसलिए चालाकी से तुम्हें यहां बुलवा लिया है।"

उदयन ने कहा, "आपकी यह चालाकी अच्छी रही!"

चंड महासेन ने कहा, "इस तरह मेरी और तुम्हारी दोनों की प्रतिष्ठा बनी रही।"

इसके बाद एक दिन चंड महासेन वासवदत्ता को साथ लेकर उदयन के पास पहुँचा। वासवदत्ता की सुन्दरता देखकर उदयन उसपर एकदम रीझ गया। उससे पहले उसने बहुत-सी सुन्दर युवतियां देखी थीं, पर उनमें वासवदत्ता-जैसी एक भी नहीं थी। वासवदत्ता भी पहली ही दृष्टि में उदयन को प्यार करने लगी। प्रेम की लीला भी अपार है।

जब चंड महासेन ने उदयन से अनुरोध किया कि वह वासवदत्ता को अपनी शिष्या बना ले तो उदयन किसी तरह इन्कार न कर सका। वासवदत्ता संगीत सीखने के लिए रोज उदयन के पास आने लगी।

उदयन और वासवदत्ता के मन में एक-दूसरे के लिए जो स्नेह और प्रेम पहले दिन पैदा हुआ था, वह दिनों-दिन बढ़ता गया। उदयन गुणी और कलाकार था। वासवदत्ता सुन्दर और सुशील थी। उदयन वीणा बजाता, वासवदत्ता सुनती। उदयन की उस वीणा के

संगीत को सुनकर वासवदत्ता अपने आपको बिलकुल भूल जाती और वासवदत्ता की सुन्दरता को देखकर उदयन भी अपनी सुध-बुध खो बैठता ।

इस तरह चंड महासेन की इच्छा पूरी हो गई । उदयन वासवदत्ता को अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करने लगा । वासवदत्ता को छोड़कर और किसी युवती से विवाह करने की बात वह सोच भी नहीं सकता था ।

: ८ :

महाराज उदयन को अवन्ति के सैनिकों ने धोखे से पकड़ लिया है, इस खबर से कौशाम्बी के लोग बड़े चिन्तित हुए । वत्स देश की सेना इतनी बलवान न थी कि वह अवन्ति की सेना से लड़कर उदयन को छुड़ा सके । इसलिए प्रधानमंत्री यौगन्धरायण ने उदयन को छुड़ाने के लिए दूसरे उपाय सोचने शुरू किये । वह वसन्तक को साथ लेकर प्राग्भार प्रदेश के भील राजा पुलिन्दक के पास पहुंचा । यह उदयन का मित्र था । यौगन्धरायण ने पुलिन्दक से कहा, "महाराज, हम महाराज उदयन को छुड़ा लाने का प्रयत्न कर रहे हैं । अवन्ति से लौटते समय हम लोग इसी रास्ते से गुजरेंगे । हो सकता है कि उस समय अवन्ति की सेना हमारा पीछा करे । उस समय आपको हमारी सहायता

करनी होगी। आपको अवन्ति की सेना को यहीं रोक लेना होगा।"

पुलिन्दक ने यह बात बड़ी खुशी से स्वीकार कर ली। बोला, "मुझसे जो भी सहायता हो सकती है, मैं खुशी से करने को तैयार हूं। महाराज उदयन छूट कर आ जायं, इससे अधिक खुशी की बात क्या हो सकती है?"

इस तरह पुलिन्दक को अपनी सहायता के लिए तैयार करके यौगन्धरायण वसन्तक को साथ लेकर अवन्ति की ओर चला। वहां जाकर वह श्मशान में ठहरा। श्मशान बहुत बड़ा था। सैकड़ों चिताएं हर समय जलती रहती थीं। मांस और चर्बी के जलने की बदबू हवा में हर समय भरी रहती थी। वहांपर बहुत से बेताल और ब्रह्मराक्षस रहते थे। इस श्मशान में यौगन्धरायण की भेंट एक ब्रह्मराक्षस से हुई जिसका नाम योगेश्वर था। यह ब्रह्मराक्षस यौगन्धरायण की बातें सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने यौगन्धरायण को कई तरह की विद्याएं सिखा दीं। इन विद्याओं के द्वारा यौगन्धरायण अपना रूप बदल सकता था और जरूरत पड़ने पर अन्तर्धान भी हो सकता था।

यौगन्धरायण ने एक बूढ़े पागल का वेश बनाया, जिसे देखकर लोगों को हँसी आये और वस-

न्तक को शहर में भेज दिया। वसन्तक जाकर राज-महल के बाहर बैठ गया।

उसके बाद यौगन्धरायण खुद शहर में घुसा। वह पागल की तरह नाचने और गाने लगा। लोगों को भी अच्छा-खासा तमाशा मिल गया। वे उसके पीछे हो लिए। काफी बड़ी भीड़ उसे घेरकर चलने लगी।
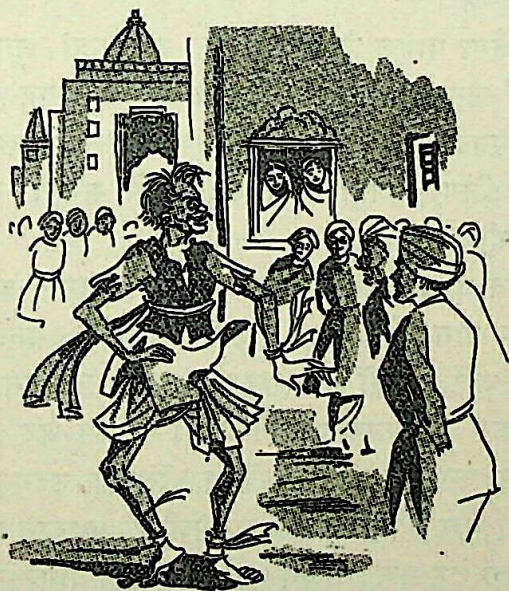
यौगन्धरायण पागल की तरह नाचने लगा

यौगन्धरायण भी धीरे-धीरे राजमहल की ओर बढ़ने लगा। महल के बाहर कोलाहल सुनकर महल की दासियां खिड़कियों से झांक-झांककर बाहर देखने लगीं। वासवदत्ता ने पूछा, "बाहर शोर कैसा हो रहा है?"

एक दासी ने कहा, "बाहर एक बहुत ही कुरूप पागल नाच-गा रहा है। उसीको देख-देखकर लोग शोर मचा रहे हैं।"

"कैसा पागल है वह? जरा उसे यहां बुलाकर लाओ! उसका नाच मैं भी तो देखूं।" यह कहकर वासवदत्ता ने उस पागल को गन्धर्वशाला में बुलवा लिया, जहां वह उदयन से संगीत सीखा करती थी।

जब यौगन्धरायण अन्दर आया तो उदयन वासवदत्ता के पास बैठा था। उसके पैरों में सोने की बेड़ियां पड़ी हुई थीं। वत्सराज उदयन को उस दशा में देखकर यौगन्धरायण की आँखों में आँसू भर आये। उसने उदयन को इशारा किया, जिससे उदयन उस बनावटी वेश में भी अपने प्रधानमंत्री को पहचान गया।

कुछ देर तक नाचने-गाने के बाद यौगन्धरायण अपनी विद्या के जोर से एकाएक छिप गया। वासवदत्ता और उसकी दासियों को वह दिखाई पड़ना बन्द

हो गया, पर उदयन को वह दिखाई देता रहा। वासवदत्ता और दासियां बहुत हैरान होकर पूछने लगीं—"वह बूढ़ा पागल कहां गया ?"

उदयन ने समझ लिया कि यह यौगन्धरायण के जादू का ही प्रभाव है कि वह मुझे तो दिखाई पड़ रहा है और इन सबको दिखाई नहीं दे रहा। उसने वासवदत्ता को वहां से हटाने के विचार से कहा, "राजकुमारी, कई दिन से सरस्वती पूजा नहीं की। तुम जाकर पूजा की सामग्री ले आओ।"

वासवदत्ता पूजा का सामान लेने चली गई। उसकी दासियां भी उसके साथ ही चली गईं। तब यौगन्धरायण ने उदयन से खुलकर बातचीत की। उसने उसे बेड़ियां काटने के औजार दिये। साथ ही कहा, "वसन्तक वेश बदले हुए एक ब्राह्मण विद्यार्थी के वेश में राजमहल के बाहर है। उसे यहीं अपने पास बुलवा लीजिये। आगे जो कुछ होगा, वह मैं समय-समय पर बताता रहूँगा।"

इतना कहकर यौगन्धरायण महल से बाहर चला गया। वासवदत्ता पूजा का सामान लेकर आई। सरस्वती देवी की पूजा कर चुकने के बाद उसने वासवदत्ता से कहा, "सरस्वती पूजा की दक्षिणा देने के लिए किसी ब्राह्मण को बुलाना चाहिए। देखो, शायद महल के

बाहर कोई ब्राह्मण मिल जाय। दासी को भेजकर बुलवा लो।"

: ६ :

इस प्रकार उदयन का प्रिय मित्र वसन्तक भी महल के अन्दर आ गया। उसने भी जब उदयन को बेड़ियां पहने हुए देखा तो वह रोने लगा। उदयन को डर लगा कि कहीं सारा भेद ही न खुल जाय। वह वसन्तक को तसल्ली देते हुए बोला, "पंडितजी महाराज, रोओ नहीं। रोग के कारण तुम्हारा यह जो शरीर टेढ़ा-मेढ़ा हो गया है, इसे मैं औषधि से ठीक कर दूंगा। तुम यहीं मेरे पास रहो।"

वसन्तक ने विनय से सिर झुकाकर कहा, "अगर आप ऐसा कर दें, तो आपकी बड़ी कृपा होगी।"

वसन्तक की कुरूप शकल को देख-देखकर उदयन को हँसी आने लगी। उसे हँसते देखकर वसन्तक और भी तरह-तरह से मुँह बनाने लगा। उसे देखकर वासवदत्ता तथा सभी दासियां हँसने लगीं। वासवदत्ता ने सोचा, यह तो अच्छा-खासा जीता-जागता खिलौना है। उसने कहा, "पंडितजी महाराज, अब आप यहीं रहिये और आपको कोई विद्या आती हो तो बताइये।"

वसन्तक ने कहा, "और तो कोई विद्या मुझे आती नहीं, पर हां, कहानियां कहना जरूर जानता हूँ।"

यह सुनकर वासवदत्ता और भी प्रसन्न हुई। कहानियां सुनना भला किसे अच्छा नहीं लगता। वह बोली—"तब तो बहुत अच्छा है। आप रहिये और हमें कहानियां सुनाया कीजिये।"

फिर क्या था, वसन्तक नित्य नई-नई कहानियां उन्हें सुनाता। इस प्रकार कहानियां सुनाते और संगीत सीखते वासवदत्ता का समय बहुत ही आनन्द में बीतने लगा। उदयन के प्रति उसका प्रेम दिनों-दिन अधिक होता गया।

एक दिन यौगन्धरायण फिर महल में उदयन के पास आया। उसने तिरस्कारणी विद्या के प्रयोग द्वारा अपने आपको इस तरह छिपाया कि वह तो सबको देख सकता था, किन्तु उसे कोई नहीं देख सकता था। उसने अपनी सारी योजना पूरी करली थी। वसन्तक और उदयन दोनों ही उसे देखकर प्रसन्न हुए। यौगन्धरायण ने अपनी योजना बताई। उसने उदयन से कहा, "महाराज, चंड महासेन ने पहले तो आपको चालाकी से पकड़ लिया और अब वह आदरपूर्वक आपको अपनी कन्या देकर विदा करना चाहता है। इस तरह वह भले ही आदर दिखाये, पर मुझे तो इसमें अपने पक्ष की कुछ छुटाई दिखाई पड़ती है। इसलिए मैंने एक और ही उपाय सोचा है। वह यह कि आप वासवदत्ता

को लेकर यहां से भाग जायं।"

उदयन ने कहा, "बात तो तुम्हारी ठीक है, पर यहां से निकल भागना सम्भव कैसे होगा ?"

यौगन्धरायण ने कहा, "वह भी मैंने सोच लिया है। वासवदत्ता के पास एक हथिनी है भद्रवती। वह इतनी तेज चलती है कि उसका पीछा चंड महासेन के हाथी नडागिरि को छोड़कर और कोई नहीं कर सकता। और नडागिरि भी हथिनी भद्रवती को देखकर लड़ता नहीं है। भद्रवती के महावत को मैंने धन देकर अपनी ओर मिला लिया है। इसलिए आप आज रात को ही वासवदत्ता को साथ लेकर भद्रवती पर सवार होकर अवन्ति से निकल जाइये। मैं पहले ही जाकर आपके मित्र पुलिन्दक से मिलकर रास्ते में रक्षा का प्रबन्ध किये देता हूँ।"

इस तरह सारी बात पक्की करके यौगन्धरायण चला गया। जब वासवदत्ता संगीत सीखने आई तो उदयन ने भाग चलने की बात उससे कही। वासवदत्ता उदयन से इतना प्रेम करती थी कि वह उसके लिए सब-कुछ करने को तैयार थी।

उसने भद्रवती के महावत को बुलाया और उससे सलाह की। भद्रवती के महावत ने अपने साथी दूसरे महावतों को अपने घर बुलाया और देवपूजा के बहाने

उन्हें खूब शराब पिलाई। वे सब नशे में चूर हो गये।

शाम के समय महावत ने भद्रवती हथिनी को यात्रा के लिए सजाना शुरू किया। इससे हथिनी जोर-जोर से चिंघाड़ने लगी। हाथी की बोली पहचाननेवाले प्रधान महावत ने उस आवाज को सुना। हथिनी कह रही थी—"आज मैं दो सौ कोस की यात्रा करूंगी।"

प्रधान महावत शराब के नशे में चूर था, इससे वह जो कुछ बोल रही थी, उसे वह स्वयं भी नहीं समझ पा रहा था और दूसरे महावतों ने भी शराब के नशे में उसकी बात को ठीक से सुना-समझा नहीं।

: १० :

रात हो गई। सारा आकाश काले बादलों से घिर गया। भद्रवती का महावत उसे लेकर वासवदत्ता के महल के पास आ पहुंचा। तब उदयन ने अपनी बेड़ियां काट डालीं। पहले वासवदत्ता और उसकी एक सखी कांचन-माला भद्रवती पर चढ़ीं। फिर अपनी वीणा लेकर उदयन चढ़ा और अन्त में वसन्तक सवार हो गया। बहुत-से हथियार उन्होंने साथ रख लिये।

महावत ने हथिनी को आगे बढ़ाया। जरा-सी देर में वह किले की दीवार के पास आ पहुंची। किले का फाटक बन्द था। महावत ने भद्रवती को अंकुश मारा। हथिनी ने आगे बढ़कर दीवार को टक्कर दी।

दीवार टूट गई और रास्ता बन गया। भद्रवती अवन्ति के किले से बाहर आ गई।

तभी किले पर पहरा देते हुए राजकुमारों की दृष्टि हथिनी पर चढ़कर भागते हुए उन लोगों पर पड़ी। उन्होंने इन्हें ललकारा और रुकने को कहा। उस समय रुकने और विचार करने का अवसर ही कहां था? उदयन ने महावत से कहा, "हथिनी को रोको मत। बढ़ाये ले चलो।"
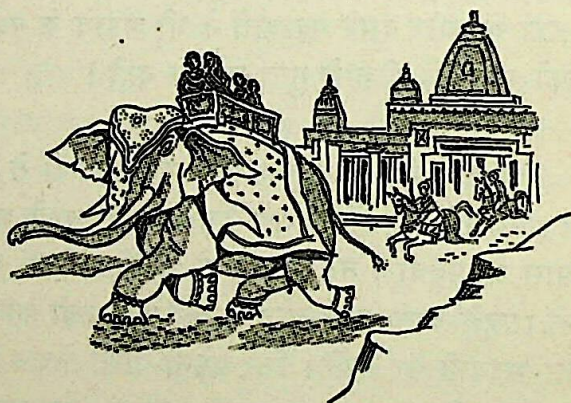
राजकुमारों ने उनका पीछा किया

भद्रवती तेजी से बढ़ने लगी। उन राजकुमारों ने पीछा किया। उदयन ने धनुष उठा लिया और एक-एक तीर मारकर उन दोनों को समाप्त कर दिया। राजकुमारों के मारे जाने पर सैनिकों ने तुरन्त जाकर चंड महासेन को सूचना दी। सारे शहर में हाहाकार मच

गया। सबसे बड़े राजकुमार पालक ने नडागिरि हाथी पर चढ़कर उदयन का पीछा किया।

नडागिरि की चाल भद्रवती से ज्यादा तेज थी। उसने कुछ ही देर में भद्रवती को जा पकड़ा। उदयन भी सावधान था। राजकुमार पालक उदयन से युद्ध करने लगा। हाथी नडागिरि हथिनी भद्रवती पर चोट नहीं कर रहा था, इसलिए पालक का पक्ष कमजोर था। कुछ ही देर बाद पालक का छोटा भाई गोपालक भी घोड़े पर सवार आ पहुंचा। उसने आकर पालक को समझाया और कहा, "पिताजी ने कहा है, इस समय लड़ाई रहने दो। मौका आने पर हम फिर वत्सराज उदयन से भुगत लेंगे।"

पिता की आज्ञा मानकर पालक ने उदयन से युद्ध बन्द कर दिया और उदयन निश्चिंत होकर आगे बढ़ा। भद्रवती सारी रात चलती रही। सबेरा होने तक उसने सवा सौ कोस रास्ता तय कर लिया। दोपहर होने तक वह दो सौ कोस चल चुकी थी। तभी उसे प्यास लगी। उदयन, वासवदत्ता तथा अन्य सब लोग उसपर से उतर पड़े। महावत उसे पानी पिलाने के लिए एक पोखर के पास ले गया। भद्रवती ने वहां पानी पिया, पर पोखर का पानी विषैला था। उसे पीते ही भद्रवती मर गई।

यह भी एक बड़ी मुसीबत हो गई। ऐसी अच्छी हथिनी के मर जाने का दुःख तो था ही, साथ ही यह भी चिन्ता थी कि अब क्या किया जाय। सब ओर दूर-दूर तक घना जंगल फैला हुआ था। इससे बाहर निकलें तो कैसे निकलें? आखिर सोच-विचारकर उदयन ने अपने मित्र वसन्तक को भीलराज पुलिन्दक के पास भेजा, जिससे वह सहायता लेकर आ सके।

वसन्तक के चले जाने के बाद शेष सब धीरे-धीरे पैदल आगे बढ़ने लगे। विपत्ति में पड़ने पर भी वीर लोग अधीर नहीं होते। अभी वे बहुत दूर नहीं पहुंचे थे कि बहुत-से डाकुओं ने आकर इन सबको घेर लिया। उदयन बड़ी वीरता के साथ डाकुओं से लड़ने लगा। एक-एक करके उसने अपने बाणों से पांच सौ डाकुओं को मार डाला, पर डाकुओं की संख्या बहुत थी। अपने साथियों के मरने पर वे और भी गुस्से में भरकर लड़ने लगे। उदयन बहुत कुशल लड़वैया था, लेकिन डाकू भी बड़े वीर और संख्या में बहुत अधिक थे। जमकर लड़ाई होने लगी। तभी वसन्तक और यौगन्धरायण के साथ भीलराज पुलिन्दक आ पहुंचा। उसके साथ बहुत-सी सेना थी। उसे देखकर डाकू भाग खड़े हुए। पुलिन्दक ने प्रेमपूर्वक उदयन को प्रणाम किया। उसके बाद सब लोग पुलिन्दक के

गांव आ गये। वह रात इन सबने उसी गांव में बिताई।

वह दिन और वह रात वासवदत्ता को जीवनभर न भूली। उस दिन वह पहले-पहल अवन्ति से बाहर निकली थी। एक ही दिन में उसे इतनी सारी बड़ी-बड़ी घटनाएं देखनी पड़ी थीं कि वह घबरा-सी गई थी। जंगल में पैदल चलते हुए उसके पैरों में नुकीली घास खूब चुभी थी, जिसका दर्द अबतक हो रहा था; पर उदयन के लिए वह सारे कष्ट सहने को तैयार थी। इसलिए इन सब कष्टों के बाद भी उसका मन प्रसन्न था।

अगले दिन यौगन्धरायण ने एक दूत कौशाम्बी में सेनापति रुमण्वान के पास भेज दिया। सन्देश पाते ही रुमण्वान सेना लेकर आ पहुंचा। कुछ दिन तक उदयन ने विन्ध्याचल के जंगलों में ही पड़ाव डाले रखा। वह चाहता था कि अवन्ति से कोई खबर मिले कि चंड महासेन का उसके और वासवदत्ता के प्रति क्या रुख है? उसके ये दिन वन में घूमने-फिरने में बीतने लगे।

घने वनों में उदयन के साथ घूमने में वासवदत्ता को बहुत आनन्द आता था। कहीं ऊंचे-ऊंचे पेड़ खड़े होते थे, कहीं बेलें फूलों से लदी होती थीं। कहीं कोई पानी का झरना 'कल-कल' करता हुआ बहता था। उसके आस-पास घनी हरियाली और ठंडी छांह होती

थी, जिसमें बैठकर कुछ देर आराम करने का मन आता था। कहीं हिरन चौकड़ी भरते हुए दिखाई पड़ते थे, तो कहीं कोई खरगोश किसी झाड़ी में छिपने की कोशिश करता दिखाई पड़ता था। इन्हीं वनों में घूमते-फिरते और आनन्द करते उनके कई दिन बीत गये।

: ११ :

एक दिन अवन्ति से एक व्यापारी आया। वह यौगन्धरायण का मित्र था। उसने बताया कि चंड महासेन उदयन से नाराज नहीं है, बल्कि अब वह चाहता है कि उदयन और वासवदत्ता का विधिपूर्वक विवाह हो जाय। इसलिए उसने आपके पास एक दूत भेजा है। आता होगा।

उदयन ने यह खबर वासवदत्ता को सुनाई। वासवदत्ता को जब कभी अपने माता-पिता और भाइयों की याद आती थी तो उसका जी उदास हो जाता था। इस समाचार को सुनकर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई।

कुछ ही समय बाद चंड महासेन का दूत उदयन के पास आ पहुँचा। उसने कहा, "महाराज, अवन्ति के महाराज चंड महासेन ने आपके लिए सन्देश भेजा है कि वासवदत्ता को आप जो अपने साथ ले आये हैं, वह आपने ठीक ही किया है। इसीलिए उन्होंने आपको वहां ले जाकर रखा था। वंदी अवस्था में आपसे वासव-

दत्ता का विवाह उन्होंने इसलिए नहीं किया कि इसमें आप अपना अपमान समझते। अब महाराज चंड महासेन यह चाहते हैं कि उनकी पुत्री वासवदत्ता का उचित विधि से विवाह हो जाय। शीघ्र ही उनके पुत्र राजकुमार गोपालक यहां आयंगे और उचित रीति से अपनी बहन वासवदत्ता का विवाह आपके साथ कर देंगे।"

यह सन्देश सुनकर उदयन को बहुत आनन्द हुआ। वह वासवदत्ता के साथ कौशाम्बी पहुंचे।

उदयन के कौशाम्बी लौटने पर उसकी प्रजा ने बड़ा आनन्द मनाया। कहां तो वह शत्रु राजा के हाथों में कैद हो गया था और कहां अब उसकी कन्या को लेकर वापस लौट आया था! सारे नगर में झंडियां और मालाएं टांगकर खुशी मनाई गई।

कुछ ही दिन बाद वासवदत्ता का भाई गोपालक आ पहुँचा और उसने उदयन तथा वासवदत्ता का उचित रीति से विवाह करवा दिया। उन दिनों कौशाम्बी में बड़ी धूमधाम रही। बहुत-से राजा इकट्ठे हुए। उन्होंने तरह-तरह के बहुमूल्य रत्न राजा उदयन को भेंट किये। गोपालक ने भी चंड महासेन की ओर से बहुत-सी कीमती चीजें अपनी बहन वासवदत्ता को दीं। उदयन ने भी गोपालक और अपने दूसरे मित्र

राजाओं को बहुत-सी अच्छी वस्तुएं भेंट दीं।

विवाह का उत्सव कुछ दिनों में समाप्त हो गया। राजा उदयन रानी वासवदत्ता के प्रेम में मग्न होकर दिन बिताने लगे। उन्होंने राज-काज की सारी चिन्ता अपने मंत्री यौगन्धरायण और सेनापति रुमण्वान पर छोड़ दी।

: ११ :

एक दिन यौगन्धरायण ने रुमण्वान से कहा, "सेनापतिजी, महाराज तो रानी के प्रेम में पड़कर सारा राजकाज छोड़ बैठे हैं। पर हमारा कर्त्तव्य है कि किसी तरह उनको चक्रवर्ती राजा बनायें। इनके पूर्वज पांडवों ने सारे संसार को जीता था। वैसा ही यश इनका भी होना चाहिए। आप कोई उपाय सोचिये, जिससे यह चक्रवर्ती सम्राट् बन जायं।"

सेनापति रुमण्वान ने कहा, "बात तो आपकी ठीक है, परन्तु इस महान कार्य को पूरा कर पाना हमारे वश में कहां है? वत्स राज्य अपने आपमें छोटा-सा राज्य है। हमारी सेना दूसरे राज्यों की सेना को हराने के लिए काफी नहीं है। कहीं ऐसा न हो कि हम दूसरों को जीतने के लिए निकलें और अपने राज्य से भी हाथ धो बैठें।"

यौगन्धरायण ने कहा, "संसार में कोई ऐसा काम

नहीं है, जो बुद्धि द्वारा हो न सकता हो। देखिए, इस समय दो ही बड़े-बड़े राज्य हैं, अवन्ति और मगध। अवन्ति को तो हमने साथ मिला ही लिया है। महाराज का श्वसुर होने के कारण चंड महासेन तो हमसे लड़ाई करेगा नहीं। शायद आवश्यकता पड़ने पर सहायता भी कर दे। अब मगध का राजा प्रद्योत बाकी है। यदि किसी तरह हम उसे अपने साथ मिला लें तो हमारा काम आधे से अधिक पूरा हो जायगा।"

"पर उसे अपने साथ मिला किस तरह लेंगे?" रुमण्वान ने कहा।

"प्रद्योत की लड़की पद्मावती से महाराज उदयन का विवाह करवाकर।" यौगन्धरायण ने कहा।

"पर रानी वासवदत्ता के रहते महाराज क्या पद्मावती से विवाह करेंगे? प्रद्योत भी ऐसी दशा में अपनी लड़की का विवाह महाराज से क्यों करेगा?" सेनापति रुमण्वान ने कहा।

"यही तो उलझन है, जिसे सुलझाना है।" यौगन्धरायण बोला। फिर कुछ देर सोचने के बाद कहने लगा, "अच्छा ऐसा क्यों न करें कि झूठमूठ ही यह खबर उड़ा दें कि वासवदत्ता मर गई। तब तो महाराज का विवाह पद्मावती से हो सकता है न?" 2037

रुमण्वान ने यौगन्धरायण की ओर ऐसे देखा जैसे

यौगन्धरायण पागल हो गया हो। बोला, "आप भी क्या बेतुकी बात करते हैं ? झूठी खबर के बहकावे में कौन आयगा ? क्या महाराज उदयन को भी पता न चलेगा कि यह खबर झूठी है और असल में वासवदत्ता मरी नहीं है ?"

"हां, इसी ढंग से खबर उड़ाई जायगी ।"

"वह कैसे ?"

"महाराज को शिकार का बहुत शौक है। हम उन्हें शिकार के लिए वन में ले जायंगे। वह जरूर तैयार हो जायंगे। वह रानी वासवदत्ता को भी साथ ही ले जायंगे। वहां हम मौका पाकर तम्बुओं में आग लगवा देंगे और अफवाह उड़वा देंगे कि रानी आग में जल मरी। इस बीच रानी को हम कहीं छिपा देंगे।"

"पर इस सबके लिए रानी को भी तैयार करना पड़ेगा, नहीं तो वही सारा भेद खोल देगी ।"

"मैंने रानी को अच्छी तरह जान लिया है। वह पति के लाभ को सोचकर जरूर इसके लिए तैयार हो जायगी। इतना ही नहीं, हम तो रानी के भाई गोपालक को भी सब-कुछ बतलाकर अपने साथ मिला लेंगे, जिससे वे लोग भी व्यर्थ दुःखी न हों ।"

रुमण्वान ने कहा, "चाल तो आपकी पक्की है, पर इतना और सोच लो कि कहीं महाराज रानी की

मृत्यु से दुखी होकर पागल न हो जायं, या मरने की ही न ठान लें !"

"उसका भी कुछ-न-कुछ उपाय करेंगे ही।" यौगन्धरायण ने कहा।

उसके बाद यौगन्धरायण ने वासवदत्ता के भाई गोपालक को बुलाने के लिए अवन्ति दूत भेज दिया। गोपालक के आ जाने पर उसे सारी बात समझा दी। गोपालक को यह बात अच्छी तो नहीं लगी कि पद्मावती उसकी बहन की सौत बनकर आवे; पर उदयन के भले के लिए उसने इस काम में सहायता देना स्वीकार कर लिया।

उसके बाद एक दिन सेनापति रुमण्वान ने उदयन से कहा, "महाराज, बहुत दिन से आपने शिकार नहीं खेली है। चलिये, कुछ दिन अपने राज्य के लावाणक प्रदेश में शिकार खेल आवें। वह इलाका मगध के राज्य के पास पड़ता है। वहां मगध के सैनिक कुछ-न-कुछ गड़बड़ करते रहते हैं। इस तरह हमारे जाने से वहां शान्ति भी बनी रहेगी।"

राजा उदयन को इसके लिए बहुत मनाना नहीं पड़ा। वह शिकार के लिए तैयार हो गया। वहां कई दिन तक रहना होगा, इसलिए रानी वासवदत्ता के भी साथ चलने का प्रबन्ध किया गया। मब लोग खूब

धूमधाम से शिकार के लिए चल पड़े ।

लावाणक प्रदेश बहुत सुन्दर था । वहां घने वन थे और उनमें जंगली पशु खूब मिलते थे। वहां पहुँच-कर राजा ने पड़ाव डाल दिया । जंगल में मंगल होने लगा । सब लोगों के दिन हँसते-गाते, कहानियां सुनते और शिकार खेलते हुए बीतने लगे । अवसर पाकर यौगन्धरायण ने इस शिकार-यात्रा का उद्देश्य रानी वासवदत्ता को भी बता दिया। सुनकर पहले तो वासव-दत्ता बहुत चौंकी, पर जल्दी ही यह वात उसकी समझ में आ गई कि उसके पति का यश और राज्य केवल इसी तरह बढ़ सकता है । अन्त में यौगन्धरायण की सलाह के अनुसार काम करने को वह तैयार हो गई ।

: १२ :

एक दिन जब उदयन शिकार के लिए जंगल में गया हुआ था तब यौगन्धरायण ने वासवदत्ता की शकल बदलकर उसे ब्राह्मणी के-से कपड़े पहना दिये । वसं-तक की शकल उसने काने विद्यार्थी की-सी बना दी और उन दोनों को साथ लेकर मगध देश की राजधानी पाटलिपुत्र जा पहुँचा । उनके वहां से जाते ही रुमण्वान ने बहुत-से तम्बुओं में आग लगवा दी और शोर मचवा दिया कि आग में रानी वासवदत्ता और वसन्तक जलकर मर गये ।

यौगन्धरायण वसन्तक और वासवदत्ता के साथ पाटलिपुत्र पहुँच गया। वहां राजकुमारी पद्मावती अपनी सहेलियों के साथ बाग में आई हुई थी। ब्राह्मण के वेश में यौगन्धरायण उसके पास पहुँचा। उसने वासवदत्ता को पद्मावती के सामने किया और कहा, "राजकुमारीजी, यह मेरी लड़की है। इसका नाम अवन्तिका है। इसका पति बुरी आदतों में फँसकर न जाने कहाँ चला गया है। मैं इसके पति को ढूंढ़ने जाना चाहता हूं। पर इस बेचारी को अकेली कहां छोड़ूं ? इसलिए आप कृपा करके इसे अपने पास रख लीजिए। मैं जल्दी ही इसके पति को ढूंढ़कर वापस ले आऊंगा। तबतक यह आपके पास रहेगी। यह इसका भाई है। इसे भी इसकी बहन के पास रहने दीजिये। पास रहने से दोनों का जी लगा रहेगा।"

पद्मावती ने अवन्तिका (वासवदत्ता) की ओर देखा। उसे उसकी शकल बड़ी प्यारी मालूम हुई। बोली, "वाह, इसका राजकुमारियों का-सा रूप है ! बेचारी पति के भला न होने के कारण कष्ट पा रही है। मैं जरूर इसे अपने पास रख लूँगी। आप बेफिक्र रहें।"

वासवदत्ता को मन-ही-मन कुछ हँसी भी आई और कुछ दुःख भी हुआ, पर भेद खुलने के डर से वह चुप

"मैं जरूर इसे अपने पास रख लूंगी।" पद्मावती ने कहा।

ही रही। पद्मावती वासवदत्ता और वसन्तक को साथ लेकर राजमहल में चली गई। यौगन्धरायण उसी दिन शाम होने से पहले ही लावाणक लौट आया।

पद्मावती ने वासवदत्ता के रूप, रंग और लक्षणों से पहचान लिया कि हो-न-हो, यह किसी बहुत ऊँचे कुल की कन्या है। जैसे मुसीबत में पड़कर द्रौपदी ने कुछ समय वेश बदलकर राजा विराट के महल में बिताया था, उसी तरह यह भी बिता रही है। इसलिए उसने वासवदत्ता के साथ बिलकुल समानता का ही बर्ताव करना शुरू किया। वासवदत्ता को भी उसके बर्ताव से बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने मन-ही-मन सोचा, अगर पद्मावती उसकी सौत बनेगी तो भी दोनों प्रेमपूर्वक

रह सकेंगी।

उधर जब शाम को उदयन शिकार खेलकर लौटा तो सारे पड़ाव पर दुःख और उदासी छाई हुई थी। जब उसने सुना कि तम्बुओं में आग लग गई और वासवदत्ता उसीमें जलकर मर गई तो वह दुःख के मारे बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो वासवदत्ता को याद करके बिलखने लगा। गोपालक और यौगन्धरायण ने बड़ी कठिनाई से उसे धीरज बंधाया, पर उदयन बहुत ही उदास रहने लगा।

उसी समय वासवदत्ता के जल मरने की खबर पाटलिपुत्र में राजा प्रद्योत के पास पहुँची। प्रद्योत स्वयं अपनी कन्या पद्मावती का विवाह उदयन से करना चाहता था, पर एक तो वासवदत्ता के रहते उदयन दूसरा विवाह करता नहीं, दूसरे वासवदत्ता के रहते पद्मावती को उदयन से पूरा आदर और प्रेम न मिल पाता। इसलिए वह चाहते हुए भी पद्मावती के विवाह का सन्देश उदयन के पास नहीं भेज सकता था। पर अब जब कि वासवदत्ता के आग में जलकर मर जाने का समाचार आगया तो कोई अड़चन न रही। उसने तुरन्त दूत के हाथ उदयन के पास सन्देश भिजवाया कि वह पद्मावती को पत्नीरूप में स्वीकार कर ले। उदयन वासवदत्ता के दुःख में बेचैन था; पर मंत्री

यौगन्धरायण और वासवदत्ता के भाई गोपालक ने समझाया कि वासवदत्ता तो अब लौट नहीं सकती, इसलिए प्रद्योत का सन्देश मान ही लेना चाहिए। उन्होंने समझा-बुझाकर उदयन को राजी कर लिया और यौगन्धरायण ने दूत के हाथ उत्तर भेज दिया, "सात दिन तक तो अभी कुछ नहीं किया जा सकता, पर उसके बाद महाराज उदयन पद्मावती से विवाह कर लेंगे। हम आपकी इच्छा को टालना नहीं चाहते, इसलिए स्वीकार कर रहे हैं।"

प्रद्योत ने धूमधाम से पद्मावती के विवाह की तैयारियाँ शुरू कर दीं। वासवदत्ता इन तैयारियों को देखती और उदास हो जाती। उदयन की याद उसे सताने लगती। ऐसे समय में वसन्तक उसे समझाता और धीरज बंधाता। वह कहता, "देखो, इस चालाकी से बलवान राजा प्रद्योत तुम्हारे पति का मित्र बन जायगा। और किसी तरह काम नहीं हो सकता था। वैसे प्रद्योत और महाराज उदयन की सदा शत्रुता ही बनी रहती। अब उदयन आसानी से चक्रवर्ती सम्राट बन सकेंगे।"

इन बातों को सुनकर वासवदत्ता को काफी तसल्ली होती।

न मुरझानेवाली माला और न मिटनेवाला तिलक लगाने की विद्या उदयन ने वासवदत्ता को भी सिखला

दी थी । वासवदत्ता ने पद्मावती को प्रसन्न करने के लिए उसे न मुरझानेवाली माला पहनाई और उसके न मिटनेवाला तिलक लगाया । जब पद्मावती की माता ने उस विचित्र माला और तिलक को देखा तो वह बोली, "ऐसी विद्या मनुष्यों को नहीं आती । अवश्य ही यह कोई देवी या यक्षिणी है, जो बेचारी किसी तरह अपने मुसीबत के दिन यहां इस रूप में काट रही है । इसके साथ सदा आदर का ही व्यवहार करना ।"

पद्मावती तो वैसे ही वासवदत्ता से बहुत प्रेम का बर्ताव करती थी, पर अब उसका और भी अधिक आदर होने लगा ।

: १३ :

पद्मावती का उदयन के साथ विवाह हो गया; परन्तु उदयन के मन से वासवदत्ता की याद एक दिन के लिए भी दूर न हुई । यौगन्धरायण ने सोचा कि कहीं सारा भेद खुल न जाय, इसलिए उसने मगधराज प्रद्योत से कहा, "हमारे महाराज आज ही यहां से चले जायंगे ।"

उदयन भी वहां ठहरना नहीं चाहता था । इसलिए प्रद्योत ने न चाहते हुए भी उन्हें उसी दिन बिदा कर दिया । जब पद्मावती अपने पिता के घर से चलने लगी तो उसने कहा कि यह अवन्तिका भी मेरे साथ ही जायगी । उसने वासवदत्ता के लिए एक अलग रथ का

प्रबन्ध करवा दिया। उसमें बैठकर वासवदत्ता और वसन्तक उदयन की सेना के पीछे-पीछे आने लगे। धीरे-धीरे रास्ता पार करते हुए सब लोग अवन्ति आ पहुँचे। अवन्ति पहुँचकर वासवदत्ता अपने भाई गोपालक के घर चली गई। वहां वह अपने भाई के गले लगकर रोने लगी। तभी यौगन्धरायण और रुमण्वान भी आ पहुँचे। उन्होंने वासवदत्ता को धीरज बंधाया और कहा, "महारानी, अब तो आपके दुःख का समय बीत चुका है। अब आप शीघ्र ही अपने पति के पास जाकर रहेंगीं।"

उधर पद्मावती ने जिन लोगों को वासवदत्ता की देखरेख करने के लिए लगाया था, उन्होंने जाकर पद्मावती से कहा कि हमारे रोकने पर भी अवन्तिका महाराज के साले गोपालक के घर चली गई है।

उस समय महाराज उदयन भी वहीं थे। पद्मावती ने उन नौकरों से कहा, "जाकर अवन्तिका से कहो कि उसके पिता उसे मेरे पास छोड़ गये हैं। इसलिए जहां मैं जाऊं, वहीं उसे भी जाना चाहिए।"

आज्ञा पाकर नौकर चले गये। कुछ देर बाद उदयन का ध्यान पद्मावती की माला और तिलक की ओर गया। यह वही 'अम्लान-माला' और 'अम्लान-

तिलक' था, जो वासवदत्ता ने लगाया था। उसे देखकर उदयन सोच में पड़ गया। उसने पूछा, "तुम्हारी यह माला किसने बनाई है और यह तिलक किसने लगाया है ?"

पद्मावती ने कहा, "क्यों ? हमारे यहां अवन्तिका नाम की एक ब्राह्मणी दासी थी। वही इस तरह के विचित्र तिलक और माला बनाना जानती थी। उसी के बारे में तो अभी ये नौकर कह रहे थे कि वह गोपालक के घर चली गई है।"

सुनकर उदयन समझ गये कि हो-न-हो, यह वासवदत्ता ही है, तभी अपने भाई गोपालक के घर चली गई है। वह रुके नहीं। तुरन्त गोपालक के घर पहुँचे।

दरवाजा खुला हुआ था। महाराज उदयन सीधे अन्दर पहुँच गये। वहां देखते क्या हैं कि वासवदत्ता, यौगन्धरायण, रुमण्वान, वसन्तक और गोपालक सभी मौजूद हैं। वासवदत्ता को देखकर उदयन मारे खुशी के उछल पड़े। इतना आनन्द उनसे सहा नहीं गया। वह बेहोश होकर गिर गये। वासवदत्ता भी बेहोश हो गई। जब होश में आये तो दोनों रोने लगे। प्रसन्नता भी बहुत बार इसी तरह रुलाई के रूप में प्रकट हुआ करती है। वासवदत्ता अपने आपको दोष देकर कहने लगी, "मैं भी कैसी अभागिन हूँ, जिसके कारण महाराज को इतना कष्ट उठाना पड़ा !"

उनकी दशा देखकर यौगन्धरायण को भी रोना आ गया। उसी समय पद्मावती भी वहीं आ पहुँची। उदयन उसके पास से बिना कुछ कहे उठकर चला आया था, इस कारण वह घबड़ा गई थी। वह भी उदयन के पीछे-पीछे गोपालक के घर आ पहुँची।

यौगन्धरायण ने कहा, "महाराज, इसमें महारानी वासवदत्ता का कोई दोष नहीं है। मगध की राज-कुमारी से आपका विवाह हो जाने पर आपका साम्राज्य खूब बड़ा हो जाय, इसलिए यह सारा जाल मैंने रचा था। जितने दिन वासवदत्ता आपके पास नहीं रही, उतने दिन वह पद्मावती के पास रही है।"

पद्मावती ने कहा, "मैं शपथ खाकर कहती हूं कि वासवदत्ता बिलकुल निर्दोष है।"

अन्त में उदयन वासवदत्ता और पद्मावती को लेकर अपने महल में लौट आया और यौगन्धरायण की सूझ-बूझ की बहुत प्रशंसा की।

उसके बाद वह दोनों रानियों के साथ सुख से जीवन बिताने लगा। पद्मावती और वासवदत्ता दोनों में आपस में बहुत प्रेम था।

कुछ समय बाद प्रद्योत को भी यह सब हाल मालूम हो गया। उसने उदयन के पास सन्देश भेजा, "आपने छल से हमारी कन्या से विवाह कर लिया है। लेकिन खैर,

जो हो गया, सो हो गया । कब आप ऐसा करें, जिससे संसार में दुःख न बढ़े ।"

उदयन ने उस दूत को पद्मावती के पास भेज दिया । पद्मावती ने सारी बात सुनकर उस दूत के हाथ अपने पिता के पास सन्देश भिजवाया, "महाराज उदयन मुझ-पर बहुत कृपालु हैं । वासवदत्ता का व्यवहार भी मेरे साथ बहन-जैसा है । इसलिए आप महाराज उदयन के प्रति मन में किसी प्रकार का द्वेष-भाव न रखें ।"

: १४ :

इस प्रकार यौगन्धरायण की कुशलता से उदयन ने अवन्ति के चंड महासेन और मगध के प्रद्योत से मित्रता स्थापित कर ली । अब कोई राजा ऐसा न था, जो उदयन का विरोध कर सकता । अतः यौगन्धरायण ने दिग्विजय के लिए यात्रा की बात की ।

उन्हीं दिनों एक दिन राजसभा में आकर एक ब्राह्मण ने दुहाई दी कि जंगल में ग्वालों ने मेरे पुत्र के पाँव काट डाले हैं । इसपर राजा ने दो-तीन ग्वालों को बुलाकर सारी बात पूछी, उन्होंने बताया कि हमलोग जंगल में पशु चराते हैं । हममें से एक ग्वाले का नाम है देवसेन । वह जंगल में एक टीले पर बैठकर अपने-आपको हम सबका राजा कहता है और हम सब उसे राजा मान-कर उसकी आज्ञा का पालन करते हैं । इस ब्राह्मण के

लड़के पैर उसकी आज्ञा से ही काटे गये हैं।"

यह सब सुनकर यौगन्धरायण ने कहा कि उस टीले के नीचे अवश्य कोई भारी धनराशि गड़ी हुई है। तभी उसपर बैठते ही उस ग्वाले में इतना तेज आ जाता है।

उदयन अपनी सेना लेकर वहां गया। उस टीले की खुदाई करने पर एक रत्नों से जड़ा हुआ सोने का सिंहासन और बहुत-सी धनराशि मिली। राजा उस सबको लेकर अपनी राजधानी में लौट आया।

अब उदयन के पास धन भी खूब आ गया था। इसलिए दिग्विजय की तैयारी करके सब दिशाओं को जीतने के लिए निकल पड़ा।

अपने बल और यौगन्धरायण की नीति-कुशलता द्वारा उसने कुछ ही दिनों में चारों ओर के राजाओं को जीत लिया और अपनी राजधानी लौट आया।

कुछ समय बाद रानी वासवदत्ता ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम नरवाहनदत्त रखा गया। राजा उदयन और उसकी प्रजा ने बड़ी खुशी मनाई।

जब राजकुमार नरवाहनदत्त बड़ा हुआ तब उदयन ने उसका विवाह कर दिया और उसे राज्य सौंपकर स्वयं अपनी दोनों रानियों के साथ तपोवन में चला गया।

चुना हुआ बाल-साहित्य

१. सीख की कहानियां
२. चिड़िया की नसीहत
३. वालकों के आचार
४. एक झाड़ी में सौ सांप
५. वीरबल की कहानियां
६. छत्रपति शिवाजी
७. देश-प्रेम की कहानियां
८. नटखट नंदू
९. गुरुजी बुरे फंसे
१०. धोखे में जान गई
११. चार दिन की चांदनी
१२. जैसे को तैसा
१३. यह मुंह मसूर की दाल !
१४. दादा की कचहरी
१५. ईंट की दीवार
१६. उदयन-कथा
१७. चाणक्य-कथा

पचहत्तर पैसे